बर्फ का गोला

नादेज़्दा कलिनिना

MINI PROGRESS & MINI RADUGA

बर्फ का गोला

नादेज़्दा कलिनिना

चित्र: इवान आर्किपोव

अंग्रेज़ी: एवगेनी स्पिरिन

फाइना गलागोलेवा

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

MINI PROGRESS & MINI RADUGA

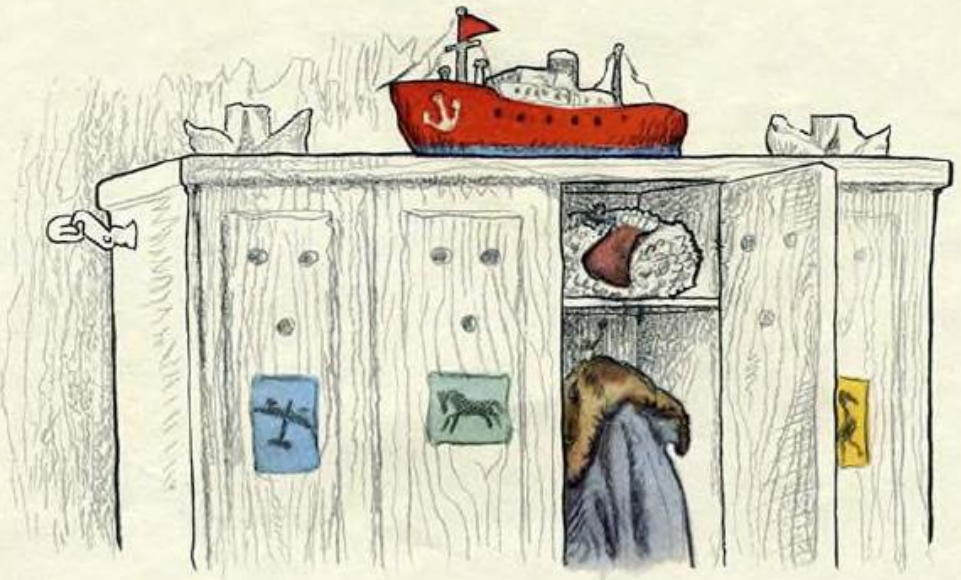

साशा और एलोशा किंडरगार्टन में कैसे आए

साशा और एलोशा जब तीन साल के हुए तब उनकी मां उन्हें पहली बार किंडरगार्टन लेकर गईं.

एलोशा हर चीज़ से डर रहा था और वो अपनी मां के पीछे छिप रहा था. लेकिन साशा अपनी मां के सामने खड़ा होकर बच्चों को घूर रहा था.

तभी वेरा इवानोव्ना ने आकर कहा:

"नमस्ते! साशा और एलोशा. तुम जल्दी से अपने ओवरकोट उतारो और फिर हम खिलौनों से खेलने के लिए जायेंगे. देखो, यह तुम्हारा लॉकर है, एलोशा, और यह साशा का लॉकर है. तुम अपने कोट इन अलमारियों में लटकाना, और टोपियां शेल्फ पर रखना. अपने फेल्ट बूटों को लॉकर के नीचे रखना, ठीक वैसे ही, जैसे अन्य बच्चे करते हैं. तुम अपने लॉकरों को पहचान पाओ उसके लिए, हम तुम्हारे लॉकरों पर अलग-अलग चित्र चिपकाएंगे.

फिर वेरा इवानोव्ना ने साशा के लॉकर पर एक हवाई जहाज की तस्वीर चिपकाई, और एलोशा के लॉकर पर एक घोड़े की तस्वीर चिपकाई.

“चलो, अब दूसरे बच्चों के पास चलें.”

मां ने साशा और एलोशा से कहा, "तुम दोनों जाओ, अब मैं भी चलती हूं, नहीं तो मुझे काम पर पहुंचने में देर हो जाएगी. देखो, शरारत मत करना और बोर मत होना. मैं शाम को तुम्हें वापस लेने आऊंगी.”

क्या वो खेलने का सही तरीका था?

साशा और एलोशा अपने समूह के खेल कमरे में गए. वहां बहुत सारे खिलौने थे: टेडी बियर, खरगोश, गुड़िया, गुड़िया का फर्नीचर, बर्तन, कार, ट्रक और फायर-ब्रिगेड की गाड़ियां. वहां सफ़ेद घोड़े पर सवार एक टेडी बियर भी था.

एलोशा ने सभी खिलौनों को देखा लेकिन उसे समझ में नहीं आया कि वो किस से खेले. साशा ने भी सभी खिलौनों को देखा. वो उन सभी खिलौनों से खेलना चाहता था. वो खिलौनों के पास दौड़ा हुआ गया. उसने अपनी बांह के नीचे एक टेडी बियर छिपाया, अपनी जेब में एक छोटा खरगोश रखा, एक गुड़िया का बिस्तर और कुछ बर्तन उठाए और फिर वो एक खिलौने कुत्ते को, उस ढेर के पास खींचकर लाया जिसे वो बना रहा था. “कृपया इन्हें न छुएं! मैं इन खिलौनों से खेलने जा रहा हूं!” उसने दूसरे बच्चों से कहा.

बच्चे खड़े होकर उसे देखते रहे. उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ. वो कैसा लड़का था! क्या वो खेलने का सही तरीका था?

बच्चों ने कैसे बनाया घर

बच्चों ने घनाकर ब्लॉक्स से घर बनाना शुरू किया. बच्चों ने एलोशा को घर बनाने में मदद करने के लिए अपने पास बुलाया.

एलोशा ने एक खिलौना कार में ईंटें ढोईं और उसने बच्चों की घर बनाने में मदद की. लेकिन साशा खिलौनों के पास कालीन पर अकेला ही बैठा रहा. उसने अपने खिलौनों की ओर बिल्कुल नहीं देखा, बल्कि वो दूसरे बच्चों को घूरता रहा. साशा अकेले बोर हो गया था. असल में वो अन्य बच्चों के साथ खेलना चाहता था. फिर वो धीरे से उठा, बच्चों के पास गया और उसने पूछा:

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ खेल सकता हूं? मैं भी मदद करना चाहता हूं."

फिर सब बच्चों ने मिलकर खेल खेले. बच्चों ने एक बड़ा घर भी बनाया. वेरा इवानोव्ना ने घर को लाल झंडों से सजाया.

वो घर कितना सुंदर लग रहा था!

बर्फ का गोला

बच्चे आंगन में टहल रहे थे. वहां उन्होंने बर्फ से एक स्नोमैन की मूर्ति बनाई. एलोशा ने एक बर्फ का गोला बनाया. उसने बर्फ की गेंद में कोयले की दो आंखें चिपकाईं. फिर उसने बर्फ में सीकें धंसाकर नाक और मुंह बनाया. कुछ देर तक बच्चे खेलते रहे. फिर वे वापस अपने किंडरगार्टन में चले गए.

एलोशा अपना बर्फ का गोला आंगन में नहीं छोड़ना चाहता था. इसलिए उसने गोले को अपनी जेब में रख लिया.

किंडरगार्टन में आकर उसने अपना फर कोट लॉकर में लटकाया. लेकिन बर्फ का गोला उसके फर कोट की जेब में ही रह गया. फिर बच्चों ने दोपहर का भोजन किया और खाने के बाद वे सोने चले गये. कुछ समय बाद बच्चे जागे. तभी एलोशा को अपने बर्फ के गोले की याद आई. फिर वो और अन्य बच्चे लॉकर की ओर भागे, लेकिन लॉकर के पास उन्हें पानी का एक छोटा ताल ही मिला!

वो क्या था?

उन्होंने दरवाज़ा खोला. जब अंदर देखा तो एलोशा के कोट की जेब से अभी भी टप-टप! टप-टप! करके पानी टपक रहा था. फिर एलोशा ने अपने कोट जेब में हाथ डाला, लेकिन अब बर्फ के गोले का कोई नामो-निशां नहीं था.

उसे अपनी गीली जेब में केवल दो कोयले और दो सीकें ही मिलीं.

उसका बर्फ का गोला कहां चला गया था?

बच्चों ने स्कूल में लौटकर आई लीना का कैसे स्वागत किया

लीना लंबे समय से बीमार थी, इसलिए वो लम्बे समय से किंडरगार्टन नहीं आई थी.

अंत में वो ठीक हुई और वापस लौटी. ख़ुशी से बच्चे बाहर हॉल में भागे और उन्होंने लीना को घेर लिया. सभी बच्चों ने ओवरकोट उतारने में लीना की मदद की. बच्चों ने उसकी टोपी उतारने में भी उसकी मदद की, और उसके कोट को लॉकर में लटका दिया, और उसके रबर के जूतों को लॉकर के नीचे रख दिया. फिर बच्चों ने लीना का हाथ पकड़ा और वे उसे उसके छोटे समूह में ले गए, सीधे गुड़ियों के पास. वहां गुड़ियों के बगल में, एक छोटी सी कुर्सी पर, एक अपरिचित लड़की बैठी थी जो खुद एक गुड़िया की तरह दिखती थी.

वो लड़की खड़ी हुई और लीना के पास गई. लड़की ने लीना की ओर हाथ बढ़ाया और कहा:

"नमस्ते! मेरा नाम स्वेतलाना है."

लीना ने स्वेतलाना का हाथ पकड़ा और फिर वे दोनों खिलौनों से नमस्ते कहने गई.

कैसा मददगार!

दोपहर के भोजन का समय हो गया था. साशा के बगल वाली मेज पर लीना नाम की एक लड़की बैठी थी. वैसे वो बहुत अच्छी लड़की थी, लेकिन वो बहुत कम खाती थी. वो एक चम्मच सूप पीती और फिर बैठकर बाकी सभी बच्चों को घूरने लगती थी.

“ठंडा होने से पहले अपना सूप खा लो, नहीं तो वो स्वादिष्ट नहीं लगेगा,'' वेरा इवानोव्ना ने लीना से कहा. लेकिन फिर भी लीना खाने की बजाए इधर-उधर ही देखती रही.

साशा ने तेज़ी से अपना खाना खाया. उसने सबसे पहले अपना सूप ख़त्म कर दिया. “मेरा सूप ख़त्म हो गया है! देखो, मेरी कटोरा एकदम खाली है,'' उसने कहा. तभी साशा की नजर लीना की प्लेट पर पड़ी. उसने उसे कुछ देर तक देखा, फिर अपना चम्मच उठाया और फिर जितनी जल्दी हो सका वो लीना का सूप खाने लगा.

"साशा मेरा सूप खा रहा है!" लीना चिल्लाई.

"मैं उसका सूप नहीं खा रहा हूं. दरअसल मैं लीना की मदद कर रहा हूं," उसने आहत भरे स्वर में कहा.

“मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं है. मैं खुद अपना सूप खा सकती हूं.''

उसके बाद वेरा इवानोव्ना ने लीना को सूप की एक और कटोरा दिया. फिर लीना ने चम्मच उठाया और अपना सूप इतनी जल्दी ख़त्म किया कि उससे सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए.

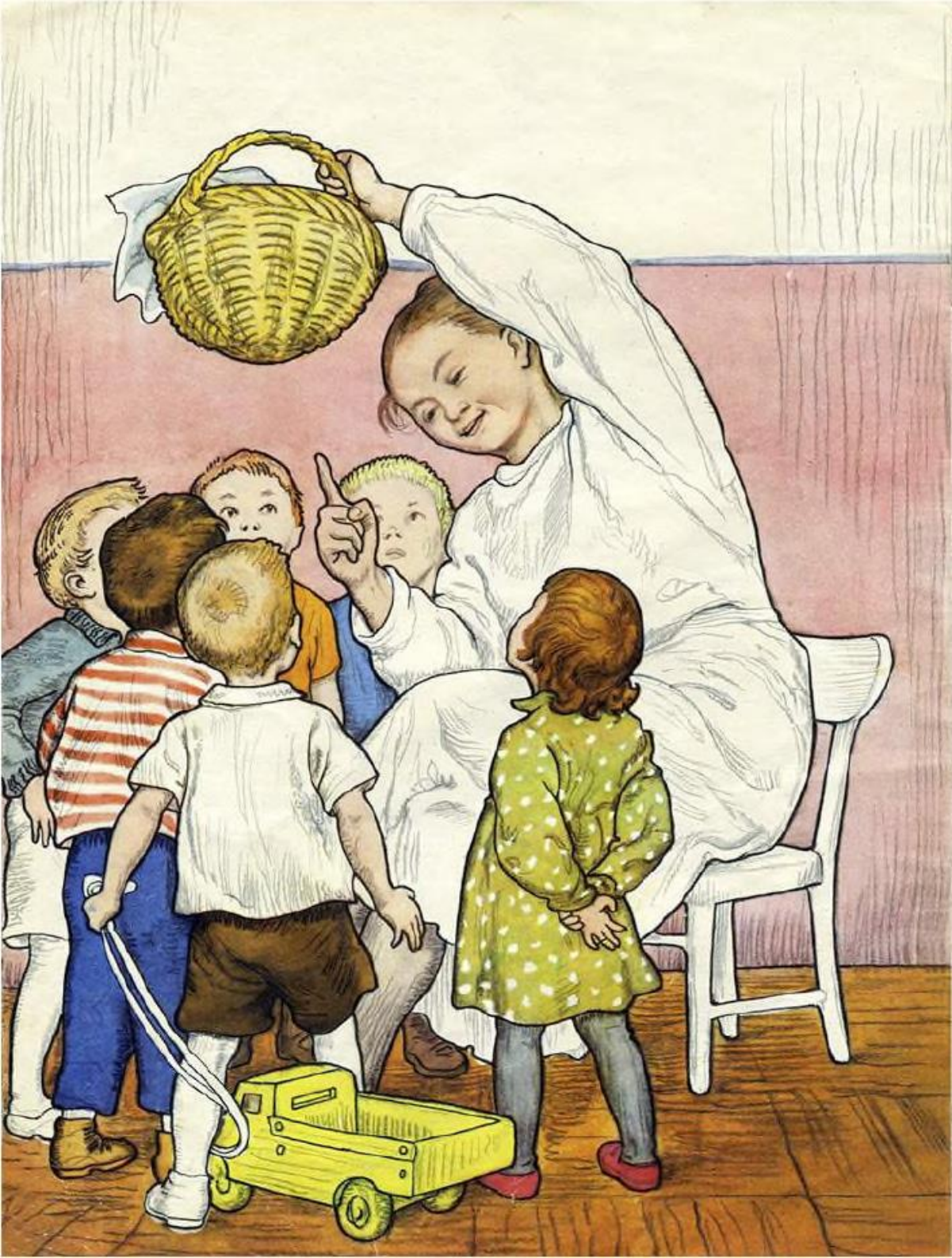

मैं कौन हूं?

एक दिन वेरा इवानोव्ना किंडरगार्टन में एक ढकी हुई टोकरी लेकर आईं.
उन्होंने बच्चों से पूछा, "इस पहेली का हल कौन बता सकता है?"
दो नुकीले कान,
चार गद्देदार पंजे,
मूंछें भयंकर
और छोटे-छोटे पंजे.
मैं सारा दिन सोती हूं
और खेलना पसंद करती हूं.
मैं रात को घूमती हूं.
और कभी-कभी चिल्लाती भी हूं.
मैं कौन हूं?
सब बच्चे चुप थे. किसी को उसका जवाब नहीं पता था.
लेकिन जवाब वहीं पर था, वो टोकरी से बाहर झांक रहा था!

दिन ख़त्म होने को आया

शाम हो गई. बच्चे मेज के पास बैठ गए और चित्रों वाली किताबों के पन्ने पलटने लगे. सबसे दिलचस्प किताबें साशा और एलोशा को दी गईं, क्योंकि आज किंडरगार्टन में उनका पहला दिन था.

लड़कों को किताबें पसंद आईं, लेकिन उन्हें किताबों को देखने का समय नहीं मिला. क्योंकि तभी मां, साशा और एलोशा को लेने आ गईं.

"आज हम घर नहीं जाएंगे," एलोशा ने कहा, "आज हम किंडरगार्टन में ही रहेंगे!"

"वो संभव नहीं होगा," वेरा इवानोव्ना ने उन्हें समझाया, "अब सभी बच्चे घर जाएंगे, और कल वे फिर वापस आएंगे."

फिर साशा और एलोशा सड़क पर चल दिए. वे आत्मविश्वास से अपनी मां के बगल में चल रहे थे. आप साफ़ देख सकते थे कि अब वे बड़े हो गए थे - अब वे किंडरगार्टन जाने लगे थे.

Nadezhda Kalinina

About the Snowball

Drawings by Ivan Arkhipov

Book for Preschool children

Translation into English by Evgeny Spirin (Sosnovoborsk, Krasnoyarsk Territory, Russia),
Faina Glagoleva (F.G.)
Edited by Arvind Gupta (Pune, India).
Layout by Arvind Gupta, Evgeny Spirin.

International project:
"Mini Progress and Mini Raduga"